

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण

પત્રાંક : ૮૭ /૫૦૩૦(ખવન) / ચોન-૧ / પ્રસ્તાવ / ૨૦૧૩-૧૪ દિનાંક ૬૭ / ૧૧ / ૨૦૧૫

अनुभवि-पत्र

यह शान्तिहृत दात्रा नगर नियोजन तथा विकास अधिकारीयम् १९७३ धी धार १४ व १५ के अन्तर्गत दी जाती है, किन्तु सर्व यह न सद्व्याप्त चालेये कि उस स्टूडी के सम्बन्ध में जिस पर प्रस्तावित व्यक्तिगतिक गठन मानविक रूपव्यूह किया जा रहा है, इससे पिरी प्रकार या किसी स्थानीय निकाय या इकता स्थानीय अधिकारी या ऐलिंग अवया फौंडे के गणिकना अधिकारी पर लिखी का कोई असर नहीं आया अर्थात् यह अनुभाव किसी के भेसिल्ड या स्वामित्व के टाइकार्ड ले लिया कोइ ब्राह्मण न रखेंगी।

क्षीन्ते खेमा श्रीवास्तव पत्नी श्री कृष्ण कुमार, श्रीमती रेति श्रीवास्तव पत्नी श्री वीरेन्द्र कुमार, श्रीमती ज्योतिश्चना पत्नी श्री अनित कुमार द्वारा लग्जुल फो होल्ड साईट नं-४४ सेकेट स्ट्रेज़िग प्राइटेट नं-०७ लक्ष्मीवंश शेष इलाहाबाद जौन लंखा (१) के अन्तर्गत दायित्व प्रसंसारित व्यवसायिक भवन मन्त्रिनी के कान में निर्माणित प्रतिक्रियों के अधीन प्रदान की जाती है :-

- लखन नगर नियोजन एवं विकास डिजिटल नियम 1973 की धारा ८८ (१) के प्रविधियों के अनुरूप गृहीता उम्मण पत्र प्राप्त होने के पश्चात् ही लप्पमांग/अधिभोग लिया जायेगा, भरन निर्माण एवं नियारोग द्वारा उपरिदि संख्या-21.६ एवं 3.1.२ ने निर्धारित प्रक्रिया पूर्ण कर दूर्घात उम्मण-पत्र प्राप्त करना आवश्यक है।
 - यह खट्टीदंति व्यवस्था (Provisional) रूपीपृष्ठी के रूप में होगी। नियोग पूर्ण होने के उपरान्त, यहाँ आवश्यक Mandatory Clearances/N.O.C की शर्तें पूर्ण करने के पश्चात् नियत लिये जाने वाले 'पूर्णता उम्मण-पत्र' प्राप्त करने के बाद ही इस नियारोग को तात्पत्तिक घट्टमांग में ले ला जा सकेगा।
 - स्थल पर ०२ अद्व बृहा लगाने होने तथा बृहों को झर-भरा रखने का दायित्व शावेदक रूप होता।
 - २५ल वार अधिवाही/उपर्योग रसीदुर्घात प्रसारणों के अनुसार ही करना चाही।
 - निर्धारित याथे शुकागारोंसे गान्धों के अनुरूप ही लिया जाय।
 - आदानपान सुकिलों के प्रतिक्रिया गे नाम आद्युत/नगर नियम द्वारा भनवित्र की स्वीकृति वो फल में छोड़ देवता/द्विवेष आशेषेत किए जाते हैं तो उसका मुश्तकन अनुपालन नाशकतां पद तात्पत्तिरी होगा।
 - पविष्य गे ५० दिन रवानित के विन्दु ५५ फिरी न्यायपत्र द्वारा लीज नियती की लाई तैयार की गयी विद्यालय औ फारण रक्षायित्व एवं काई विद्यारोग उम्मण पड़ता है तो स्वीकृत मानवित्र स्वरूप नियत विना लियी आरण यहाँ नहीं कर दिया जायेगा। मानवित्र की स्वीकृति से लोगोंमें अधिकार प्राप्त नहीं होगा। भू-स्वाभित्र वस्त्रधी लोही भी विद्युत सकार व्यापाराय/प्रार्थिकासे द्वारा नियस्त लिया जा सकता है।
 - यदि भावेदक द्वारा कोई उत्तरार्पण दूल्हना लियती ज्ञानी है अथवा गला शून्य की गयी है तो ३०५० नगर नियोजन एवं विकास अधिनियम १९७३ की धारा १५ (१) के अन्तर्गत मानवित्र नियस्त करने वाला होगा।
 - यह खट्टीदंति वर लेवल पौच वर्ग की आवधि के लिए है।
 - मानव निर्दाप से वदि न.ली के सहज की पर्याय अथवा सङ्ग्रह या न.ली के लिये भाग (जो गलान के शाद मन, पृष्ठ भाग अथवा इसके आकार के लालन दिक गई हो) को हानि पहुँचे तो गुरुरवापी तैयार हो जाने पर १५ दिन के भीतर अपाय वदि विकासा प्राविकरण २५ के नियत शून्यना हो जा और शीश कह हो पहले ही उससे अपने अर्दे से गला कराकर गुरुवर्षत्र अवरथा लियसे विकास प्राविकरण को सानोव ले जाए, मैं कर देगा।।
 - यह नियाण फे लाभ इसला भी ध्यान रखन होगा कि भारतीय विद्युत अधिनियम १९८० (इनियन इलेक्ट्रिकिटी लॉन्स १९६५) नियम १२ का उल्लंघन कियी गी दशा में न होना वाडिए, वदि विलास प्राविकरण की जानकारी में रेहे माले पाये गये तो यह ऐसे लियोग यो तोक अथवा हठत रुकता है।
 - अवेदन को नियारागुरुसार विकासा प्राविकरण यो गलान को नींद तक लगा छत तक वह जाने एवं उसके पूर्ण हो जाने को त्रुयना गलन आवार छोने से पूर्ण देना होगा तथा उस वार्षी का नाम भी देना होगा जिसके नियोक्तान ने मानव लियारा छुआ है।
 - यदि नियाण ने मालवर लॉन का उत्तराधिन होना पदा गया तो नियाणकों को दी गई स्वीकृतो रख समझी जायेगी और देवता गत्या नियाण अन्वेषक व्यापित लर उत्तर अधिनियम जी धारा २७ (१) के अन्तर्गत कार्यवाही आवार की जायेगी।

مذکور شد

